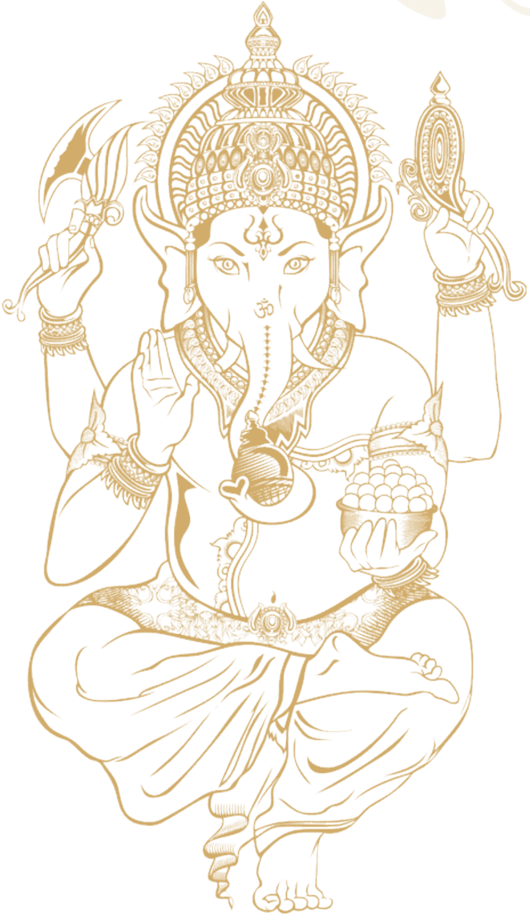

Mr. Vedika Bhatia

25 Jul 2003

07:30 PM

Nabha

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120192201

तिथि 25/07/2003 **समय** 19:30:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Nabha **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:54:11
अक्षांश 30:22:00 उत्तर **रेखांश** 76:12:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:25:12 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	15:16:17 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:06:30 घं	योनि	सर्प
सूर्योदय	05:38:55 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	19:24:01 घं	वर्ण	वैश्य
चैत्रादि संवत	2060	वश्य	चतुष्पाद
शक संवत	1925	वर्ग	मृग
मास	श्रावण	युँजा	पूर्व
पक्ष	कृष्ण	हंसक	भूमि
तिथि	12	जन्म नामाक्षर	वे-वैशाली
नक्षत्र	मृगशिरा	पाया(रा.-न.)	रजत-स्वर्ण
योग	ध्रुव	होरा	सूर्य
करण	कौलव	चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी
मंगल 6वर्ष 0मा 5दि

राहु	
30/07/2009	
31/07/2027	
राहु	12/04/2012
गुरु	05/09/2014
शनि	12/07/2017
बुध	30/01/2020
केतु	16/02/2021
शुक्र	17/02/2024
सूर्य	10/01/2025
चन्द्र	12/07/2026
मंगल	31/07/2027

योगिनी
संकटा 6वर्ष 10मा 15दि

उल्का	
09/06/2025	
10/06/2031	
उल्का	09/06/2026
सिद्धा	09/08/2027
संकटा	08/12/2028
मंगला	07/02/2029
पिंगला	09/06/2029
धान्या	09/12/2029
भ्रामरी	09/08/2030
भद्रिका	10/06/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			11:10:22	मक	श्रवण	1	चंद्र	मंगल	---	0:00			
सूर्य			08:19:22	कर्क	पुष्य	2	शनि	शुक्र	मित्र राशि	1.70	ज्ञाति	पितृ	क्षेम
चंद्र			25:12:32	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	राहु	मूलत्रिकोण	1.49	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			16:08:14	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	सम राशि	1.25	मातृ	भ्रातृ	सम्पत
बुध			28:12:55	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	शत्रु राशि	0.86	अमात्य	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			29:00:25	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	उच्च राशि	1.06	आत्मा	धन	प्रत्यारि
शुक्र			01:39:56	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	राहु	शत्रु राशि	1.35	कलत्र	कलत्र	विपत
शनि			12:41:20	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	बुध	मित्र राशि	1.02	पुत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		03:36:52	वृष	कृतिका	3	सूर्य	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		03:36:52	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	मित्र राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

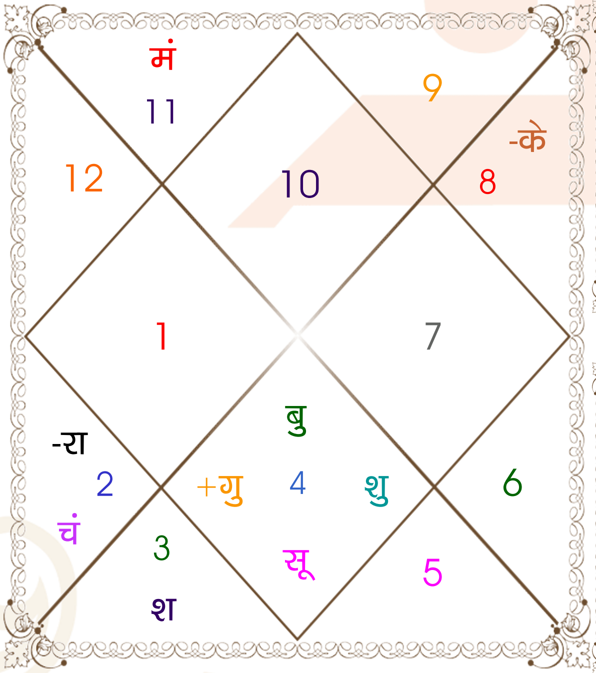

चन्द्र कुंडली

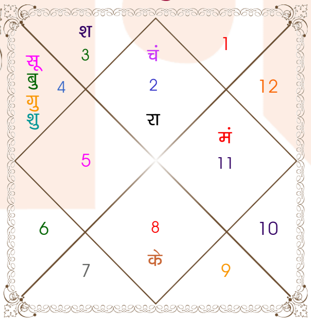

नवमांश कुंडली

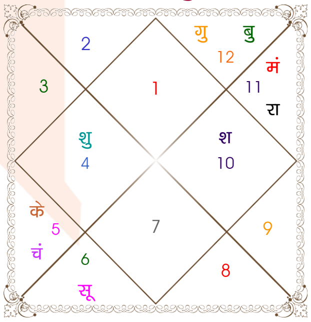

सर्वाष्टकवर्ग

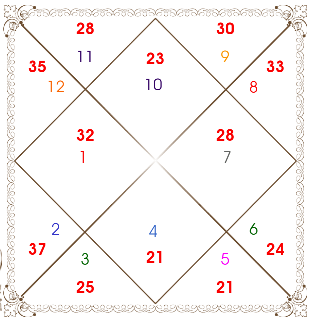

दशमांश कुंडली

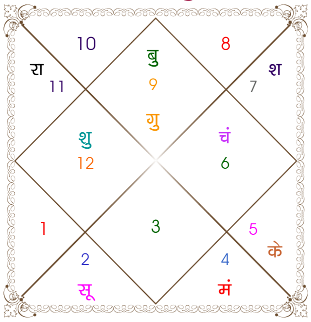

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

नक्षत्रफल

आप मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि सर्प, वर्ण वैश्य, वर्ग मूषक, गणदेव तथा मध्य नाड़ी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म का प्रथम अक्षर वे या बे से प्रारम्भ होगा यथा- वेदवती।

स्वाभाविक रूप से आप चतुर एवं चंचलता से युक्त होगी। आपके समस्त कार्य चतुराई से सम्पन्न होंगे। धैर्य के गुण से आप युक्त रहेंगी तथा समस्त शुभ या अशुभ समय में धैर्य से काम लेंगी। इसके साथ ही यदा कदा आप अन्य जनों के प्रति उपेक्षा का भी प्रदर्शन कर सकती है।

चतुरश्चपलो धीरः कूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुर चंचल धैर्यवान, कूरकर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकारी तथा अन्य जनों से द्वेष करने वाला होता है।

नकली वस्तुओं या प्रतिलिपि तैयार करने में आप कुशलता का प्रदर्शन करेंगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अपने परिश्रम एवं बुद्धि द्वारा ही सम्पन्न करेंगी।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र का जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तु बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी और द्वेषी होता है।

आप की प्रवृति प्रारम्भ से ही भयाकान्त भी रहेंगी। आप एक दक्ष तथा विदुषी महिला भी हो सकती हैं। आप हमेशा उत्साह से परिपूर्ण रहेंगी तथा धन ऐश्वर्य एवं वैभव के सुख का भी अभाव नहीं रहेगा।

चपलश्चतुरोभीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति चंचल, चतुर, डरपोक, विद्वान, उत्साही धन, वैभव तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

आप अस्त्र शस्त्र विद्या में निपुण हो सकती हैं तथा अधिकांश अस्त्र शस्त्रों के बारे में जानकारी रहेगी। आप विनयशील होंगी तथा सबसे नम्रतापूर्वक अपने को प्रस्तुत करेंगी।

आप गुणों तथा गुणवानों के प्रति असीम श्रद्धा का भाव अपने मन में रखेंगी तथा उन्हें उचित सम्मान प्रदान करेंगी एवं उनसे विशेष रूप से अनुरक्त रहेंगी। आप विलासी प्रवृति की होंगी तथा सम्पूर्ण प्रकार के भौतिक सुख साधनों एवं विलासी वस्तुओं से सम्पूर्ण रहेंगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग की विशेष प्रिय होंगी तथा हमेशा अच्छे मार्ग पर चलने के लिए यत्नशील रहेंगी।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।
जातकाभरणम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र का मानव अस्त्र शस्त्र विद्या में पारंगत, नम्र, गुणों का आदर करने वाला, विलासी राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

हृदय से आप शान्त रहेंगी तथा भ्रमण या यात्रा करना आपको रुचिकर लगेगा। अतः आपका अधिकांश समय यात्रा तथा भ्रमण आदि में ही व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

अर्थात मृगशिरा में उत्पन्न जातक सौम्यचित्त वाला घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, कुटिल दृष्टि युक्त, कामपीड़ित तथा रोगी होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विनम्र स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

आप वृष राशि में पैदा हुई हैं। अतः आपका वर्ण गौर लालिमा युक्त तथा गाल स्थूल होंगे। आपकी आँखे मोटी तथा बड़ी बड़ी होंगी। प्रकृति से भी आप थोड़ी आलसी होंगी। श्रेष्ठकुलोत्पन्न जनों के प्रति आपके मन में असीम सेवा तथा श्रद्धा का भाव निहित रहेगा। गुरु तथा ब्राहमणों को आप हृदय से सम्मान प्रदान करेंगी तथा उनके अनुदेशों के पालन हेतु सर्वदा तत्पर रहेंगी। आप वात तथा कफ मिश्रित प्रवृति की होंगी। तथा प्रायः सुखी तथा बुद्धि से सम्पन्न रहेंगी। आपके बाल घुँघराले होंगे तथा दान शीलता की प्रवृति भी आप में रहेगी।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप जीवन पर्यन्त सर्व प्रकार के भौतिक सुखों का उपभोग करेंगी तथा अपनी दानी प्रवृति से समाज में प्रसिद्ध होंगी। शुद्धता या सफाई के प्रति आप अत्यधिक सावधान रहेंगी तथा हमेशा शुद्धता पूर्वक रहने के लिए प्रयत्न शील होंगी। आपके सारे कार्य कुशलता पूर्वक पूर्ण होंगे। बल का अभाव आपके पास नहीं रहेगा। आप पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करेंगी। अतः प्रकृति आपकी विलासमय हो जाएगी। परिणाम स्वरूप आप भौतिक सुख साधनों को प्राप्त करने के लिए दिल खोलकर व्यय करेंगी। आप तेजस्वी होंगी। तथा चाल चलन श्रेष्ठ रहेगा। आपके समस्त मित्र अच्छे गुणों से युक्त रहेंगे।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपकी मुखाकृति एवं जानुभाग दीर्घाकार के होंगे। आप अपने जीवन के प्रथम दो भागों में कष्टों का अनुभव करेंगी परन्तु दो भाग अत्यन्त सुख तथा आनन्द से व्यतीत करेंगी। क्षमाशीलता तथा त्याग की भावना से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा समयानुसार इनका उचित प्रर्दशन भी करेंगी। प्रारम्भ में आपको कष्ट उठाने पङ सकते हैं तथा परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा। आपकी पीठ, मुख तथा बगल में मस्सा या व्रण आदि के चिन्ह भी होंगे।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

सन्तति संख्या में आपकी कन्या संतति अधिक होगी। आपका उचित व्यवहार तथा उत्तम चाल चलन आपको समाज में सम्मान दिलाएगा। इस प्रकार सर्व प्रकार के ऐश्वर्य एवं सुख का उपयोग करती हुई चारों तरफ कीर्ति प्राप्त करेंगी।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विशाल तथा विस्तृत होगा तथा बाल घने तथा घुँघराले होंगे। आप दूध का दूध तथा पानी का पानी करने में अर्थात् शुद्धाशुद्ध में शीघ्र ही भेद करने वाली होंगी। आपके चलने की गति अत्यन्त ही मनमोहक होगी तथा शरीर एवं शरीर के अंग दीर्घ स्थूल एवं सुडौल होंगे।

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

शनैः शनैः चलना आपको अत्यन्त रूचिकर लगेगा। आपके अपने समस्त कार्य बुद्धिमता तथा चतुराई से पूर्ण होंगे। परोपकार की भावना भी आपके अर्न्तमन में निहित रहेगी तथा जीवन में समय समय पर इस भावना को पूर्ण करने के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगी। इस प्रकार आप अपने सत्कार्यों तथा पुण्य के द्वारा जीवन को सुख से व्यतीत करेंगी।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपकी मुखाकृति दीर्घाकार होगी तथा सौन्दर्य आपका दर्शनीय होगा। जीवन में कष्ट सहने में आप सफलता प्राप्त करेंगी। तथा आपकी प्रवृति सविलास गमन प्रिय होगी। आप एक उच्चाधिकार प्राप्त महिला अधिकारी या गणमान्य महिला हो सकती हैं। आपके उदर में जठराग्नि की प्रबलता व्याप्त रहेगी। आप युवा तथा वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप अच्छे स्वभाव वाली महिला होंगी तथा भगवान विष्णु तथा शिव की अर्चना में अपनी रूचि रखेंगी।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वेबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप देव गण में पैदा हुई हैं अतः आपकी वाणी श्रेष्ठ एवं कर्णप्रिय होगी। आप हमेशा सत्य वक्ता होंगी तथा जीवन में सत्य के पालन के लिए यत्नशील रहेंगी। आपकी बुद्धि भी सरल बुद्धि होगी। सब कुछ सरलता से ग्रहण करना तथा सरलता पूर्वक अपने भावों को प्रकट करना आपकी प्रमुख विशेषता होगी। आपको अल्प एवं शाकाहारी भोजन बहुत प्रिय लगेगा। गुणों की आप ज्ञाता होंगी तथा श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा बताए गए सद्गुणों से आप युक्त होंगी। आप सर्व प्रकार से सुख सम्पन्न होंगी तथा किसी भी प्रकार का धनाभाव आपके पास नहीं रहेगा। समृद्धि हमेशा बनी रहेगी।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आप देखने में अत्यन्त सुन्दर तथा स्वस्थ लगेंगी। दानी प्रवृति आपकी स्वभाव से ही रहेगी। अतः जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को अपने इस कृत्य से उपकृत करेंगी। आप

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

सादगी पसन्द रहेंगी तथा दिखावटीपन से हमेशा दूर रहेंगी। समाज में आप एक विदुषी महिला के रूप में भी जानी जाएंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आप सर्पयोनि में पैदा हुई हैं। अतः कभी कभी आपके अन्दर क्रोध की मात्रा अत्यधिक हो जाएगी जिससे आपका अपने ऊपर कोई नियंत्रण नहीं रहेगा। प्रवृति आपकी चंचल रहेगी तथा कार्यों को चपलता पूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। जिससे इच्छित परिणाम कभी ही प्राप्त होंगे। जिहवा भी आपकी चपल होगी तथा नाना प्रकार के स्वादों को खाने की इच्छा आपकी बनी रहेगी अर्थात् आप स्वाद लोलुप होंगी।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी

विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

आपके लिए मार्गशीर्षमास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियाँ, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर एवं धनु राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियों में हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय, लेन-देन आदि महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि का चन्द्रमा भी शुभकार्यों में आपके लिए त्याज्य है। इस समय पर शरीर की सुरक्षा की भी चिन्ता करनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय खराब चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक विकलता का आभास हो रहा हो, व्यापार नौकरी या प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से सन्तोषी माता के उपवास रखने चाहिए तथा साथ ही श्वेत मोती श्वेत वस्त्र, चावल, शहद, कपूर श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप किसी योग्य विद्वान से कराने पर भी अशुभ फलों का नाश होगा तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान शंकर या विष्णु की उपासना भी कर सकती हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com